वर्ष 2 अंक 2 अक्टूबर 2023

इतिहास समाचार

क्रिएटिव हिस्ट्री ट्रस्ट की गतिविधियों का मुखपत्र

इतिहास समाचार ग्रामीण इतिहास, भारतीय ज्ञान की परंपरा, सामाजिक विकास, लोक स्मृति आदि के आकलन एवं संकलन-संयोजन के लिए कार्यरत क्रिएटिव हिस्ट्री ट्रस्ट की गतिविधियों का मुखपत्र है जिसका प्रकाशन अपने सदस्यों और इतिहास में दिलचस्पी रखनेवाले देश-विदेश के बौद्धिकों के बीच निःशुल्क वितरण के लिए किया जाता है। यह ग्रामीण इतिहास, लोक स्मृति, भारतीय समाज, ज्ञान की परम्पराएं, संस्कृति और उपेक्षित इतिहास के उस पक्ष के दस्तावेजीकरण के लिए प्रतिबद्ध है, जिसे अमहत्त्वपूर्ण मानकर मुख्यधारा के चिंतकों द्वारा छोड़ दिया जाता है।

सलाहकार समिति

डॉ. देवेंद्र चौबे, महेंद्र प्रसाद सिंह, अनिल कुमार गोयल, डॉ. हितेंद्र कुमार पटेल, डॉ. कुमार कौस्तुभ, प्रदीप कुमार और डॉ. उज्ज्वल आलोक (संयोजक)

संपादक-मण्डल

डॉ. रश्मि चौधरी, डॉ. गणपत तेली, डॉ. आशीष कुमार पांडेय, डॉ. अजय कुमार यादव, प्रियंका कुमारी, डॉ. संजय कुमार, डॉ. आरती और डॉ. नीलम

विशेष परामर्श

नागेंद्र नाथ ओझा, डॉ. एस. एन. आर. रिजवी, लीलाधर मंडलोई, प्रशांत सी. वाजपेयी, डॉ. जे. एन. सिन्हा, सुरेश कांटक, डॉ. दीपक कुमार राय, परवेज आलम, डॉ. बद्रीनारायण, डॉ. मणींद्र नाथ ठाकुर, डॉ. अखलाक अहमद आहन, डॉ. रामप्रसाद भट्ट, डॉ. रेणु शाह, सुनील सुधाकर, डॉ. अविरल पांडेय, डॉ. पी. रवि, विद्याशंकर चौबे, रमाकांत उपाध्याय, दिव्य विजय सिंह, डॉ. शशांक शेखर, लक्ष्मीकांत मुकुल, हरिश्चंद्र शर्मा, डॉ. छाया चौबे, देश निर्मोही, अनिल कुमार सिंह, समदर्शी संजय, अनिल कुमार पाठक, अजय कुमार, डॉ. सीमा पटेल, शकील अंसारी, वृजभूषण चौबे, सत्येंद्र कुमार चौबे और अखिलेश कुमार पांडेय

कापी एडिटर / विशेष सहयोग / ग्रामीण सहयोग

डॉ. संतोष भारद्वाज, डॉ. खुशी पटनायक, राहुल शर्मा, आमिर हमजा, श्याम जी चौबे और जितेंद्र चौधरी

*संपादन / संचालन / परामर्श / सहयोग पूर्णतः अवैतनिक और अव्यवसायिक

उत्तराखंड के गाँवों में दर्ज है भारत का असली इतिहास

10वाँ सर्जनात्मक इतिहास वार्षिक सम्मेलन 2022 संपन्न, इतिहास समाचार के अक्टूबर 2022 का हुआ लोकार्पण

जयहरीखाल : "उत्तराखंड के गाँवों के नाम उनके भौगोलिक, सामाजिक और ऐतिहासिक संरचनाओं की तरफ संकेत करते हैं। यहां के गाँवों के नामों में आए बदलाव भी उसके सामाजिक विकास के इतिहास की उन प्रक्रियाओं को समझने में मदद करते हैं जिनका संबंध राष्ट्रीय इतिहास के साथ होता है।" पिछले दिनों उत्तराखंड के जयहरीखाल में 8 अक्टूबर 2022 को आयोजित क्रिएटिव हिस्ट्री ट्रस्ट के 10वाँ सर्जनात्मक इतिहास वार्षिक सम्मेलन 2022 में ये बातें उभरकर आईं। कार्यक्रम में इतिहासकार संजय कुमार ने 15वाँ कुँवर सिंह स्मृति व्याख्यान, लोक इतिहासकार जसपाल सिंह बिष्ट ने 10वाँ रामायण चौबे स्मृति लोक व्याख्यान और युवा इतिहासकार शिवानी रावत ने 3रा कुमार नयन स्मृति ग्रामीण इतिहास व्याख्यान दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए जर्मनी के हैम्बर्ग यूनिवर्सिटी के प्रो. रामप्रसाद भट्ट ने ग्रामीण इतिहास को भारतीय इतिहास लेखन का अनिवार्य पक्ष बताया। चर्चित लेखक देवेंद्र चौबे ने बताया कि ग्रामीण इतिहास लेखन की इस नई दृष्टि में इतिहास लेखन की प्रक्रिया में आम जन की स्मृतियों और उनकी भागीदारी को महत्त्व दिया जाता है। प्रारंभ में इतिहासकर रश्मि चौधरी ने इतिहास लेखन में लोक और उसके मन को समझने के महत्त्व पर जोर दिया और सामाजिक अभिव्यक्तियों को इतिहास लेखन का अनिवार्य तत्त्व बताया। क्रिएटिव हिस्ट्री ट्रस्ट, रंगश्री, प्रतिश्रुति, परंपरा और बक्सर स्कूल ऑफ हिस्ट्री द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम के दूसरे सत्र में उत्तराखंड के स्थानीय इतिहासकारों में डी. सी. बैबनी, अजय शंकर ढौंढियाल और उमा घिल्डियाल ने उत्तराखंड के इतिहास में लोक की उपस्थिति की चर्चा की। ग्रामीण बुद्धिजीवी अनूप मेंदोला और युवा आलोचक अजय कुमार यादव ने विशेष टिप्पणी की और अध्यक्षता करते हुए इतिहासकार दीपक कुमार राय ने ग्रामीण इतिहास की अनिवार्यता को भारतीय इतिहास के लिए जरूरी बताया। इस अवसर पर आयोजित काव्य पाठ में महेंद्र प्रसाद सिंह, आमिर हमजा, पूनम भाटिया और वंदना राय ने अपनी कविताएं सुनाई। आरंभ में रंगश्री के अध्यक्ष महेंद्र प्रसाद सिंह ने अतिथियों का स्वागत किया और क्रिएटिव हिस्ट्री के सचिव आशीष कुमार पांडेय ने धन्यवाद ज्ञापन करते हुए कहा कि "उत्तराखंड के जयहरीखाल में क्रिएटिव हिस्ट्री ट्रस्ट द्वारा ग्रामीण इतिहास पर कार्यक्रम का होना एक ऐतिहासिक घटना है।"

जनता के नजरिया से लिखा गया इतिहास है ग्रामीण इतिहास

गंगातट पर हुआ 8वाँ बक्सर ग्रामीण लेखक इतिहासकार परिसंवाद 2022

बक्सर : "भारतीय इतिहास लेखन के नजरिए को अब बदलने की जरूरत है। नये इतिहास लेखन में अब सत्ता के नजरिए के समानांतर जनता के नजरिए को भी महत्त्व देने की जरूरत है, जिसे कभी अभिलेखागारों में जगह नहीं मिली।" पिछले 12 दिसंबर 2022 को क्रिएटिव हिस्ट्री द्वारा बिहार के बक्सर के अहिरौली के गंगातट पर हुए 8वाँ बक्सर ग्रामीण लेखक इतिहासकार परिसंवाद में प्रसिद्ध लेखक सुरेश कांटक ने ये बातें कही। पत्रकार शशांक शेखर ने कहा कि "ग्रामीण इतिहास का लक्ष्य है, समाज में उत्पन्न संवादहीनता और असंवेदनशीलता की कमी को दूर करते हुए बिखरे हुए इतिहास को जोड़ना।" परिसंवाद में श्री मधुसूदन आचार्य ने जहां इतिहास और पुराण के अंतर को स्पष्ट किया, वहीं कवि लक्ष्मीकांत मुकुल ने नटवार एवं धनसोई गाँव की सांस्कृतिक परंपरा को लोककथा के माध्यम से प्रस्तुत किया। अन्य वक्ताओं में ग्रामीण बुद्धिजीवी फौजदार मांझी द्वारा बक्सर क्षेत्र के सांस्कृतिक महत्त्व, कृष्णानंद चौबे ने मानस के भीतर उपजी मानसिकता की मिथकीय चेतना, कृष्णानंद उपाध्याय ने बक्सर की प्राचीन ज्ञान परंपरा, प्रखंड पदाधिकारी मिथिलेश बिहारी वर्मा ने लोक साहित्य के महत्त्व और यज्ञनाथ पांडेय ने इतिहास के उन अनछुए पहलुओं की ओर ध्यान इंगित किया जो लोक की महत्त्वपूर्ण धरोहर हैं। कार्यक्रम में 'पंचकोशी मेला' के लेखक देवेंद्र चौबे ने कहा कि "ग्रामीण इतिहास लेखन समूह ग्रामीण समाज में मौजूद लोक स्रोतों के बहाने एक नए इतिहास के निर्माण की कोशिश कर रहा है।" धन्यवाद ज्ञापन युवा आलोचक डॉ. छाया चौबे ने किया। कार्यक्रम में मधुसूदन चौबे, सुदर्शन पंडित, आनंद कुमार, बृजभूषण, जितेंद्र मिश्र, सत्येंद्र चौबे, जितेंद्र चौधरी समेत कई व्यक्ति उपस्थित रहे।

क्रिएटिव हिस्ट्री ट्रस्ट की पहली कार्यकारिणी (2022-25) का गठन

डॉ. रश्मि चौबे, इतिहासकार, ट्रस्ट की संस्थापक और कार्यकारिणी की अध्यक्ष; रमाकांत उपाध्याय, तकनीकी विशेषज्ञ, ट्रस्ट के उपाध्यक्ष; डॉ. आशीष कुमार पांडेय, युवा चिंतक, ट्रस्ट के सचिव; प्रियंका कुमारी, युवा अध्येता, ट्रस्ट की संयुक्त सचिव; अखिलेश कुमार पांडेय, रंगकर्मी, ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष; कार्यकारिणी के सदस्य : डॉ. दीपक कुमार राय, इतिहासकार; डॉ. गणपत तेली, युवा आलोचक; बृजभूषण चौबे, इतिहास चिंतक; डॉ. आरती, युवा अध्येता; डॉ. नीलम रानी, युवा अध्येता और डॉ. संजय कुमार, युवा अध्येता।

सलाहकार समिति (2022-25)

डॉ. देवेंद्र चौबे, चर्चित लेखक और शिक्षाविद, सलाहकार समिति के अध्यक्ष; सलाहकार समिति के सदस्य : महेंद्र प्रसाद सिंह, रंगकर्मी; अनिल कुमार गोयल, वित्तीय मामलों के जानकार; डॉ. हितेंद्र कुमार पटेल, इतिहासकार; डॉ. कुमार कौस्तुभ, पत्रकार; प्रदीप कुमार, युवा अध्येता; डॉ. उज्ज्वल आलोक, युवा आलोचक एवं सलाहकार समिति के संयोजक।

क्रिएटिव हिस्ट्री ट्रस्ट ने किया बक्सर चैप्टर (बक्सर स्कूल ऑफ हिस्ट्री, 2022-25) का गठन

आमसभा की पहली वार्षिक बैठक में क्रिएटिव हिस्ट्री ट्रस्ट ने बक्सर चैप्टर (बक्सर स्कूल ऑफ हिस्ट्री) का गठन किया जिसके संयोजक हैं - डॉ. शशांक शेखर (पत्रकार) और सह-संयोजक हैं - लक्ष्मीकांत मुकुल (कवि और इतिहासकार) और डॉ. छाया चौबे (युवा चिंतक)। ट्रस्ट ने 1764 के बक्सर-युद्ध के लिए मशहूर रहे बक्सर क्षेत्र के ग्रामीण इतिहास लेखन के लिए इतिहासकारों, लेखकों और ग्रामीण बुद्धिजीवियों का एक सलाहकार समूह बनाया है, जिसमें शामिल अध्येता हैं - राजनीतिक विचारक नागेंद्र नाथ ओझा, इतिहासकार एस. एन. आर. रिजवी, जे. एन. सिन्हा, दीपक कुमार राय, रश्मि चौधरी, संजय कुमार, रंगकर्मी महेंद्र प्रसाद सिंह, अखिलेश कुमार पांडेय, ग्रामीण बुद्धिजीवी श्री मधुसूदन आचार्य जी, विद्याशंकर चौबे, परवेज आलम, फौजदार मांझी, लेखक सुरेश कांटक, देवेंद्र चौबे, पी. रवि, युवा आलोचक गणपत तेली, आशीष कुमार पांडेय, प्रियंका कुमारी, विधि विशेषज्ञ अनिल कुमार पाठक, संजय समदर्शी, मीडिया विशेषज्ञ पंकज कुमार, तकनीकी विशेषज्ञ सत्येंद्र कुमार चौबे, युवा ग्रामीण बुद्धिजीवी श्याम जी चौबे और जितेंद्र चौधरी।

सार्थक कुमार और गौरी कुमारी को मिली वार्षिक छात्रवृत्ति और बुद्धिजीवियों को स्मृति चिन्ह

अहिरौली में ग्रामीण इतिहास पर केंद्रित कार्यक्रम के दौरान मध्य विद्यालय के विद्यार्थी गौरी कुमारी और सार्थक कुमार को कक्षा में अधिकतम अंक प्राप्त करने के लिए क्रिएटिव हिस्ट्री द्वारा मोनाको देवी स्मृति छात्रवृत्ति 2022 एवं तारा एम. स्मृति छात्रवृत्ति 2022 प्रदान किया गया। साथ ही, ग्रामीण बुद्धिजीवियों में विद्याशंकर चौबे, फौजदार मांझी, बहादुर मांझी और श्यामजी चौबे को स्मृति चिन्ह भेंट किया गया।

विश्वरंग 2022 : इतिहास की एक नई धारणा है क्रिएटिव हिस्ट्री

भोपाल : "क्रिएटिव हिस्ट्री इतिहास की एक नई धारणा है जो सबाल्टर्न इतिहास की तरह ही इतिहास के क्षेत्र में एक नया कार्य कर रही है। हमारे मन में कुछ सवाल हैं, पर हम सृजनात्मक समूह के इतिहासकारों से एक नई उम्मीद भी करते हैं।" पत्रकार अरविंद मोहन ने रवींद्रनाथ टैगोर वि. वि., भोपाल के विश्वरंग में 19 नवंबर 2022 को हुए सत्र में क्रिएटिव हिस्ट्री/ सृजनात्मक इतिहास की धारणा पर बात करते हुए कहा। इतिहासकार हितेंद्र पटेल ने जहां इतिहास क्षेत्र में आई नई दृष्टियों से भारतीय इतिहास लेखन की जरूरत पर जोर दिया, वहाँ चर्चित लेखक देवेंद्र चौबे ने इतिहास लेखन में साहित्यिक स्रोतों के साथ ग्रामीण लोक में मौजूद स्मृतियों के दस्तावेजीकरण की बात की। दलित लेखक श्यौराज सिंह बेचैन का मानना था कि दलित समाज को शामिल किए बिना नया इतिहास लेखन अधूरा है। क्रिएटिव हिस्ट्री ट्रस्ट की संस्थापक और इतिहासकार रश्मि चौधरी ने कहा कि इतिहासकारों को अब ग्रामीण लोकमन पर बात करने की जरूरत है। उल्लेखनीय है कि विश्वरंग में इस सत्र की परिकल्पना की थी प्रसिद्ध कवि और विचारक लीलाधर मंडलोई ने और समन्वय एवं साकार किया प्रसिद्ध लेखक संतोष चौबे ने।

लक्ष्य पूरा करने के लिए ट्रस्ट की आमसभा ने बनाई अनेक समितियाँ

पिछले 19 जून 2023 को हुई आमसभा की पहली वार्षिक बैठक में क्रिएटिव हिस्ट्री ट्रस्ट ने अनेक समितियों का गठन किया तथा उसमें एक संयोजक, एक उप संयोजक समेत तीन सदस्यों को नामित किया। वे समितियाँ और उसके सदस्य हैं - अभिलेखागारीय समिति : रमाकांत उपाध्याय (संयोजक), दीपक कुमार राय (उप संयोजक); सदस्य : लक्ष्मीकांत मुकुल, अखिलेश कुमार पांडेय, देवेंद्र चौबे। मीडिया, जनसंपर्क और वेबसाईट समिति : संजय कुमार (संयोजक), सत्येंद्र चौबे (उप संयोजक); सदस्य : नीलम रानी, सुनील सुधाकर, शशांक शेखर। पुरस्कार, अध्येतावृत्ति और छात्रवृत्ति समिति : देवेंद्र चौबे (संयोजक), प्रियंका कुमारी (उप संयोजक); सदस्य : आशीष कुमार पांडेय, गणपत तेली, नीलम रानी। प्रकाशन समिति : अजय कुमार यादव (संयोजक), प्रदीप कुमार (उप संयोजक); सदस्यः आरती, संजय कुमार, आमिर हमजा। कानूनी सलाहकार समिति : आरती (संयोजक), विधि उदयशंकर (उप संयोजक); सदस्य : अनिल कुमार सिंह, अनिल कुमार पाठक, संजय समदर्शी। कल्याण समिति : अखिलेश कुमार पांडेय (संयोजक), रश्मि चौबे (उप संयोजक); सदस्यः छाया चौबे, आरती, नीलम रानी। आंतरिक गतिविधियां और प्रशासन समिति : आशीष कुमार पांडेय (संयोजक), बृजभूषण चौबे (उप संयोजक); सदस्य : अजय कुमार यादव, संजय कुमार, सत्येंद्र चौबे।

क्रिएटिव हिस्ट्री ट्रस्ट के पहले स्थापना दिवस पर मिले इतिहास के अध्येता

क्रिएटिव हिस्ट्री ट्रस्ट के पहले स्थापना दिवस पर 6 सितंबर 2023 की शाम संस्थापक न्यासियों की बैठक के बाद इतिहास के अध्येताओं में प्रशांत सी बाजपेयी, रश्मि चौधरी, रमाकांत उपाध्याय, देवेंद्र चौबे, अजय कुमार यादव, प्रदीप कुमार, आमिर हमजा आदि मिले और एक नए इतिहास की तरफ बढ़ते कदम को लेकर इंडिया कॉफी हाउस में देर तक चर्चा हुई। उसमें ट्रस्ट द्वारा दिल्ली में 2024 में होने वाले वार्षिक व्याख्यान की चर्चा महत्त्वपूर्ण थी। बैठक में, ट्रस्ट के पंजीकरण आदि एवं अन्य संबंधित मामले में सहयोग के लिए न्यासियों द्वारा ए के जी ग्रुप की परिकल्पना करनेवाले अनिल कुमार गोयल और उनके आत्मीय सहयोगियों में वेदप्रकाश सोनी तथा सोनिका भारती के प्रति आभार भी प्रकट किया गया।

अहिरौली के गंगातट पर बनेगा बक्सर इतिहास स्तंभ

क्रिएटिव हिस्ट्री ट्रस्ट के न्यासियों की पहले स्थापना दिवस 6 सितंबर 2023 को हुई बैठक में यह निर्णय लिया गया कि 1764 के बक्सर युद्ध के लिए मशहूर शहर बक्सर और भारतीय ज्ञान परंपरा तथा अहिल्या मंदिर के लिए प्रसिद्ध गाँव अहिरौली के गंगातट पर आनेवाले वर्षों में ट्रस्ट की ओर से बक्सर इतिहास स्तंभ का निर्माण किया जाएगा। यह भी तय हुआ कि ग्रामीण समाज द्वारा पुनरोद्धार किए जा रहे प्राचीन अहिल्या मंदिर के सौजन्य से ट्रस्ट द्वारा मंदिर में अहिल्या संग्रहालय और उचित स्थान पर रामायण चौबे स्मृति ग्रामीण पुस्तकालय का निर्माण भी आनेवाले वर्षों में किया जाएगा। इसके लिए क्रिएटिव हिस्ट्री ट्रस्ट की अभिलेखागारीय समिति के संयोजक और सिविल इंजीनियर रमाकांत उपाध्याय से आग्रह किया गया कि वे अहिरौली की यात्रा के बाद निर्माण कार्य के लिए शीघ्र ही एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार करें।

नगवा और उनवाँस में होगा क्रिएटिव हिस्ट्री ट्रस्ट का 11वाँ सम्मेलन

क्रिएटिव हिस्ट्री ट्रस्ट के बोर्ड ऑफ ट्रस्टी की बैठक में यह तय हुआ कि मेरा गाँव, मेरा इतिहास / My Village, My History पर केंद्रित क्रिएटिव हिस्ट्री ट्रस्ट का 11वाँ सम्मेलन 25 और 26 नवंबर 2023 को क्रमशः 1857 के सेनानी मंगल पांडेय के गाँव नगवा (बलिया) और लेखक आचार्य शिवपूजन सहाय के उनवाँस (बक्सर) में होगा। यह भी बताया गया कि ट्रस्ट की तरफ से 1857 के सेनानी मंगल पांडेय और 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के बलिया के नायक चित्तू पांडेय पर एक मोनोग्राफ भी तैयार करवाया जाएगा।

उपलब्धियाँ

वर्ष 2023 का साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला नार्वे के मशहूर लेखक जॉन फोस्से को। समूह से जुड़ी उज्बेकिस्तान की भारतविद उल्फत मुहिबोवा भारतीय संस्कृति संबंध परिषद की फेलोशिप से सम्मानित हुई। इसी प्रकार, साहित्य के क्षेत्र में कवि बद्रीनारायण साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित हुए और कथाकार चंदन पांडेय स्वयं प्रकाश स्मृति सम्मान से। रमा तक्षक को मिला राजस्थान साहित्य अकादेमी का सम्मान।

ग्रामीण इतिहास : अहिरौली और फौजदार मांझी

फौजदार मांझी एक आमजन हैं तथा 1764 के बक्सर युद्ध के लिए मशहूर क्षेत्र के एक गाँव अहिरौली के निवासी हैं। गाँव के इतिहास की उन्हें गहरी समझ है तथा वे मानते हैं कि "इतिहास, इतिहास ही होता है, चाहे वह गाँव का हो या शहर का।" अहिरौली गाँव की संरचना को वह एक मिथकीय इतिहास के रूप में देखते हैं और कहते हैं कि "यह गाँव दक्षिण से बंगाली माई, उत्तर से गंगा, पूरब से मथिन माई और पश्चिम से अहिल्या माई से बंधा हुआ है, और इस कारण स्त्री सत्ता का प्रतीक है। एक समय गौतम ऋषि के आश्रम के कारण यहाँ ज्ञान का सृजन हुआ तथा आधुनिक काल में सन्यासी बाबा के कारण यह गाँव 1942 के आंदोलन के केंद्र में आया।" 1764 के युद्ध की चर्चा वे एक बड़े युद्ध के रूप में करते हैं तथा युद्ध में लड़े दो स्थानीय योद्धाओं - सैय्यद अब्दुल गुलाम और अब्दुल कादिर रहमतुल्लाह का नाम आदर के साथ लेते है। वे मानते हैं कि जल, उर्वर मिट्टी, कृषि संस्कृति, सिद्ध ऋषियों और क्षेत्र में हुए ऐतिहासिक युद्धों के कारण इस क्षेत्र में ज्ञान तथा इतिहास का अथाह भंडार बिखरा हुआ है, जिसके दस्तावेजीकरण की जरूरत है।

रंगश्री ने किया राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय और एलियांस में नाटकों का मंचन

रंगश्री ने पिछले 23 जुलाई को एलियांस के. एम. अल. भारतीय सभागार में अरविंद विद्रोही कृत तथा रंगकर्मी महेंद्र प्रसाद सिंह द्वारा निर्देशित कब्रिस्तान का उद्घाटन एवं 26 अगस्त को राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, दिल्ली के सम्मुख सभागार में महेंद्र प्रसाद सिंह लिखित-निर्देशित नाटक बबुआ गोबरधन का मंचन किया, जिसमें मुख्य भूमिका निभाई महेन्द्र प्रसाद सिंह, सौमित्र वर्मा, अखिलेश पांडेय आदि ने। यह एक सुखद अवसर था जब 1978 में इस्पात नगरी बोकारो की संस्था ने पिछले 30 वर्षों में भोजपुरी रंगमंच को एक ऊंचाई प्रदान किया है।

जेएनयू नर्सरी स्कूल द्वारा मनाया गया वार्षिक दिवस

हर वर्ष की तरह 29 मार्च 2023 को जेएनयू नर्सरी स्कूल के प्रांगण में नन्हें विद्यार्थियों, अध्यापकों और अभिभावकों द्वारा हर्षोल्लास के साथ वार्षिक सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें तरह-तरह के कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम में नन्हें विद्यार्थियों को प्रमाणपत्र भी दिया गया।

नये इतिहास के लिए सही स्रोतों तक पहुंचना जरूरी है

गेयटी में हुआ दूसरा साहित्येतिहास लेखन शिमला परिसंवाद 2023

शिमला : "इतिहास एक गंभीर विषय है। इतिहास लेखन की प्रक्रिया में सही स्रोतों तक पहुंचना जरूरी होता है। हिमाचल प्रदेश के गाँवों में ऐतिहासिक स्रोतों की भरमार है।" पिछले दिनों परम्परा जेएनयू स्कॉलर्स ग्रुप, हिमालय साहित्य और संस्कृति मंच, क्रिएटिव हिस्ट्री ट्रस्ट, आधार प्रकाशन और बक्सर इतिहास संस्थान द्वारा साहित्येतिहास लेखन पर आयोजित दो दिवसीय परिसंवाद में ये बातें उभरकर आईं। शीघ्र प्रकाश्य हिंदी साहित्य का इतिहास (769 ई से 1857 ई) खंड 3 पर केंद्रित इस परिसंवाद में प्रसिद्ध लेखक एस. आर. हरनोट, हिमाचल के संस्कृति विभाग के सचिव और इतिहास के अध्येता राकेश कंवर, कथाकार-विचारक राजकुमार राकेश, चर्चित लेखक देवेंद्र चौबे, पल प्रतिपल के संपादक देश निर्मोही, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के आशुतोष कुमार, विजयलक्ष्मी नेगी एवं वीरेंद्र सिंह ने अपने विचार रखे। परिसंवाद में हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन पर युवा आलोचक अजय कुमार यादव ने आदिकाल और भक्तिकाल, नीलम रानी ने ब्रजभाषा, आरती ने अवधी, संजय कुमार ने अपभ्रंश, प्रियंका कुमारी ने भोजपुरी एवं स्त्री संदर्भ, देविना अक्षयवर ने आप्रवासी लेखन और आमिर हमजा ने सांझी संस्कृति से जुड़े उन लेखकों के कुछ डाटा को शेयर किया जिन्हें अबतक इतिहास लेखन में ठीक से जगह नहीं मिली है। कार्यक्रम में नीतीश यादव और सुशील कुमार ने भी अपने विचार रखे और धन्यवाद ज्ञापन दिया युवा लेखिका देविना अक्षयवर ने।

ग्रामीण मेला : जोधपुर का खेजड़ली मेला

जोधपुर के खेजड़ली गाँव में वर्ष 1736 ई. में खेजड़ी(शमी) वृक्ष की रक्षा के लिए बिश्नोई समाज के 363 लोगों ने अपनी कुर्बानी दी थी। कहा जाता है कि राजा के आदेश पर दरबार के लोग खेजड़ली में खेजड़ी के पेड़ काटने पहुंचे। गाँव के लोगों ने आग्रह किया कि पेड़ नहीं कार्टे, लेकिन वे नहीं माने। पेड़ काटना शुरू कर दिया। जनश्रुति है कि खेजड़ली की अमृतादेवी बिश्नोई ने गाँव के लोगों को गुरु जंभेश्वर महाराज की सौगंध दिलाई और खुद पेड़ से चिपक गईं। शेष लोग भी पेड़ों से चिपक गए। फिर संघर्ष में एक के बाद एक कर 363 लोग मारे गए। बाद में बिश्नोई समाज ने इन्हें शहीद का दर्जा दिया और इनकी याद में हर साल खेजड़ली में मेला भी लगता है। इस पेड़ के बारे में कहा जाता है कि यह एक उपयोगी वृक्ष है, जो राजस्थान के थार मरुस्थल एवं अन्य स्थानों पर पाया जाता है तथा यह तेज गर्मियों में भी हरा-भरा रहता है। अकाल के समय रेगिस्तान के आदमी और जानवरों का यही एक मात्र सहारा है।

लोकार्पण : साहित्य के इतिहास लेखन में एक नई पहल है, यह पुस्तक

दिल्ली : "साहित्य के इतिहास लेखन को गंभीरता से लेने की जरूरत है। यह पुस्तक इस दिशा में एक नई पहल है।" 27 फरवरी 2023 को प्रगति मैदान, दिल्ली के विश्व पुस्तक मेला में देवेंद्र चौबे, अजय कुमार यादव, गणपत तेली, उज्ज्वल आलोक द्वारा संपादित और आधार प्रकाशन से प्रकाशित पुस्तक के लोकार्पण में यह बात उभरकर आई। कार्यक्रम में आलोचक एवं चिंतक विनोद शाही, आलोचक एवं कथाकार डॉ. देवेंद्र चौबे, राजनीतिक समाजशास्त्री डॉ. मणींद्र नाथ ठाकुर, इतिहासकार डॉ. रश्मि चौधरी, लेखक डॉ. रेखा सेठी, कथाकार महेश कटारे, पल प्रतिपल के संपादक देश निर्मोही, आलोचक कर्मेंदु शिशिर ने विचार रखे। पत्रकार कुमार कौस्तुभ, युवा अध्येता संतोष भारद्वाज, सांस्कृतिक कार्यकर्ता सविता झा खान, डॉ. संजय कुमार, आमिर हमजा, डॉ. आशीष कुमार पांडेय, धीरेंद्र, डॉ. सविता शर्मा, डॉ. नीलम रानी, डॉ. आरती, चंद्रशेखर शर्मा आदि भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

चीन में भी हुआ हिंदी साहित्य का इतिहास खंड 2 का लोकार्पण

शीआन : "इतिहास के बारे में बात करना और उसका लेखन करना एक महत्त्वपूर्ण काम है। भारत और चीन के अध्येता यह कार्य कर रहे हैं। यह हिंदी के विकास के लिए भी जरूरी और महत्त्वपूर्ण है।" 11 अगस्त 2023 को शीआन अंतरराष्ट्रीय अध्ययन विश्वविद्यालय के एशियाई और अफ्रीकी अध्ययन संस्थान के हिंदी विभाग द्वारा एक्सपर्ट बिल्डिंग सभागार में आयोजित चीनी और हिंदी भाषा तथा साहित्य अध्ययन पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में विश्वविद्यालय के अध्यक्ष(कुलपति) प्रो. वू याओवू, भारत चीन संस्कृति तुलनात्मक शोध केंद्र के निदेशक प्रो. ग फू फिंग आदि के लोकार्पण में यह बात उभरकर आई। इस कार्यक्रम में भारतविद तंग पिंग, इतिहासकर रश्मि चौधरी, हिंदी अध्यापक छन थियांग, बांग्ला की जेंग क्वायंग, लेखिका बीणा बुदकी, चीनी टेलीविजन की ली लीन, मीरा, पार्वती आदि सहित अनेक गणमान्य जन उपस्थित थे।

नहीं रहे साहित्य और इतिहास के चिंतक मैनेजर पांडेय (1941-2022)

दिल्ली : "हिंदी के प्रसिद्ध आलोचक मैनेजर पांडेय संवाद करने में विश्वास करते थे। संवाद की प्रक्रिया में वे यह देखते थे कि कार्य करनेवाले अध्येता के विचार साहित्य और समाज के लिए कितने उपयोगी हैं।" दिवंगत आलोचक मैनेजर पांडेय पर चाणक्य के नालंदा सभागार, पटना में 8 नवंबर 2022 को आयोजित स्मृति सभा में ये बातें उभरकर आई। अध्यक्षता करते हुए हिंदी के दक्षिण भारतीय विद्वान आर. एस. सर्राजु ने प्रो. मैनेजर पांडेय को एक बड़ा आलोचक बताया। आलोचक गोपेश्वर सिंह ने उनके निधन को जहां हिंदी की अकादेमिक और बौद्धिक दुनिया की एक बहुत बड़ी क्षति बताया, वहीं लेखक देवेंद्र चौबे ने उन्हें भारतीय और आधुनिक दर्शन, इतिहास तथा जनसमाज के बीच संवाद करनेवाला एक प्रगतिशील समाजशास्त्रीय आलोचक बताया। स्मृति सभा में आलोचक विनय कुमार सिंह, सत्यप्रकाश त्रिपाठी, सत्यपाल शर्मा, कमलानंद झा, रत्नेश विश्वक्सेन और दलित लेखिका रजत रानी मीनू ने भी अपने विचार रखे। उपस्थित विद्वानों में बहादुर मिश्र एवं विनय कुमार चौधरी ने उन्हें बिहार की माटी की ऊपज बताया।

इतिहास के नायक : मंगल पांडेय और चित्तू पांडेय

भारतीय इतिहास में बलिया ही एक ऐसा क्षेत्र है जिसे बागियों की धरती या बागी बलिया कहा जाता है। इस क्षेत्र से 1857 के पहले स्वाधीनता संग्राम के मंगल पांडेय और 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के चित्तू पांडेय दो ऐसे सेनानी थे जिन्होंने अंग्रेजी राज को झकझोर कर रख दिया। मंगल पांडेय का बंगाल के बैरकपुर में अंग्रेजी फौज से बगावत करना एक असाधारण घटना थी जिसकी चर्चा इतिहासकार एक बड़ी परिघटना के रूप में करते हैं। इसके लिए मंगल पांडेय को कोर्ट मार्शल के बाद 8 अप्रैल 1857 को मौत की सजा दे दी गई थी। इसी प्रकार, 1942 में गांधी के "करो या मरो" के नारा के बाद बलिया की जनता ने चित्तू पांडेय के नेतृत्व में बलिया को अंग्रेजी हुकूमत से आजाद करा लिया था जिसे बड़े-बड़े इतिहासकार एक क्रांतिकारी पहल के रूप में देखते हैं। खास बात है कि ये दोनों सेनानी मूलतः बलिया के ग्रामीण क्षेत्र से थे। इतिहासकारों का आकलन है कि भारतीय स्वाधीनता आंदोलन की धुरी आरंभ से ही गाँव और ग्रामीण लोगों के हाथों में थी जिसे महात्मा गांधी के आंदोलनों के बाद नेतृत्वकारी भूमिका मिली।

पहल : ग्रामीण स्कूली विद्यार्थियों के बीच रोशनी

डिघी : हिंदी के चर्चित लेखक और शिक्षा के सवालों पर लगातार लिखने वाले प्रेमपाल शर्मा पिछले कई वर्षों से बुलंदशहर के एक गाँव डिघी के स्कूली विद्यार्थियों के बीच जरूरत की किताबें बांटकर ज्ञान की रोशनी फैला रहे हैं। इतना ही नहीं, वे उनके साथ संवाद भी करते हैं और भविष्य के लिए मदद भी। यह एक बड़ी बात है।

किताबें

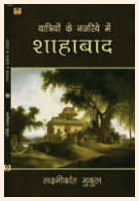

यात्रियों के नजरिए में शाहाबाद : लक्ष्मीकांत मुकुल, सृजनलोक प्रकाशन, दिल्ली, 2023; हिंदी साहित्य का इतिहास : कुछ पाठ, कुछ विमर्श, खंड 2 संपादक : देवेंद्र चौबे, अजय कुमार यादव, गणपत तेली, उज्ज्वल आलोक, संपादन सहयोग : अंकित नरवाल, मधुलिका बेन पटेल, संजय कुमार, प्रियंका कुमारी, नीलम रानी, आरती, प्रदीप कुमार, आधार प्रकाशन, पंचकुला, 2023; शहर जो खो गया : विजय कुमार, सेतु प्रकाशन, नोएडा, 2023; क्या फर्ज है कि सबको मिले एक सा जवाब : आमिर हमजा, हिंदी युग्म, नोएडा, 2023; भारतीय संस्कृति और साहित्य : के. श्रीनिवास राव, भावना प्रकाशन, दिल्ली, 2023; दलित साहित्य : एक अंतर्यात्रा और हिंसा की जाति : जातिवादी हिंसा का सिलसिला : बजरंग बिहारी तिवारी, नवारुण प्रकाशन, गजियाबाद और परिकल्पना, दिल्ली, 2023; समकालीन कहानी का समाजशास्त्र : देवेंद्र चौबे, प्रकाशन संस्थान, दिल्ली, पेपरबैक 2023; क्या बने बात : लीलाधार मंडलोई, सेतु प्रकाशन, नोएडा, 2022; गंगा से कावेरी : शैलेन्द्र चौहान, मंथन प्रकाशन, जयपुर, 2023; नए मगध में : राकेश रेणु, 2022; बागी फिरंगी: भारत की आजादी के पश्चिमी योद्धाः रामचन्द्र गुहा, अनुवादः अभिषेक श्रीवास्तव, पेंगुइन बुक्स, 2022; प्राचीन भारत : समुद्र और समाज (600 ई से 1200 ई) : नीलेश कुमार झा, पुस्तक पथ, वाराणसी, 2022; पृथ्वी गंधमयी तुम : अनुराग चतुर्वेदी, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 2022; अग्निपथ से न्यायपथ : देवकीनंदन गौतम, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 2022; नई दिल्ली दो सौ बत्तीस किलोमीटर : खेमकरण सोमान, समय साक्ष्य, देहरादून, 2022; राग सौन्दर्य और रस : अनीता मेहता, ब्लूवन इंक प्रकाशन, नोएडा, 2022; अप्रवासी साहित्य और अभिमन्यु अनत : देविना अक्षयवर, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली, 2022; अनल पाखी : नामवर सिंह की जीवनी : अंकित नरवाल, आधार प्रकाशन, पंचकुला, 2021; ईश्वर के बीज : विनोद शाही, आधार, 2021; ख्यात साहित्य और इतिहास लेखन : विक्रमसिंह अमरावत, इतिहास अनुसंधान संस्थान, जोधपुर, 2027

ग्रामीण इतिहास कार्यशाला

ग्रामीण इतिहास कार्यशाला का आयोजन प्रतिवर्ष किसी-न-किसी गाँव में किया जाता है। बक्सर और बलिया क्षेत्र में होनेवाली इस कार्यशाला के संपर्क सूत्र हैं: डॉ. रश्मि चौधरी, डॉ. देवेंद्र चौबे, डॉ. दीपक कुमार राय, सुरेश कांटक, डॉ. शशांक शेखर, डॉ. लक्ष्मीकांत मुकुल, डॉ. छाया चौबे, डॉ. आशीष कुमार पांडेय, परवेज आलम, फौजदार मांझी और श्याम जी चौबे।

फोन : 8383842812, 9131433478 एवं 9868967552

ई-मेल : creativehistorygroup@gmail.com

सामाजिक इतिहासकार
जेरोम ब्लम

- प्रदीप कुमार, युवा अध्येता

अमेरिकी आर्थिक इतिहासकार प्रोफेसर जेरोम ब्लम (1913-1993) की कृषि और ग्रामीण समाज के इतिहास में भी गहरी दिलचस्पी थी। बाल्टीमोर, मैरीलैंड में जन्मे ब्लम 1947 में प्रिंसटन विश्वविद्यालय के इतिहास विभाग से जुड़े और 1961 में इतिहास के प्रोफेसर बनने के बाद 1967 तक विभागाध्यक्ष भी रहे। 1966 में उन्हें इतिहास का हेनरी चार्ल्स ली प्रोफेसर नामित किया गया और 1981 में वे प्रोफेसर एमेरिटस हुए। उन्होंने 1933 में जॉन हॉपकिन्स विश्वविद्यालय से स्नातक के बाद 1947 में वहीं से पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान उन्होंने यूनाइटेड स्टेट्स आर्मी के फील्ड आर्टिलरी में चार साल तक सेवा दी, जिसमें वे प्राइवेट से लेकर कैप्टन तक के रैंक पर पहुँचे थे।

उनका मुख्य शोध मध्य और पूर्वी यूरोप में कृषि संरचनाओं और समाज पर था। वे इस विषय के विशेषज्ञ और अधिकारी विद्वान थे। उनकी किताब 'लॉर्ड एंड पीजेंट इन रशिया : फ्रॉम द नाइंथ टू द नाइनटींथ सेंचुरी' (1961), 'कृषि और ग्रामीण समाज' विषय पर अंग्रेजी बौद्धिक जगत में एक मानक पुस्तक के रूप में स्थापित है। इसमें इन्होंने रूस के ग्रामीण क्षेत्रों में जमींदारों और किसानों के बीच के आपसी राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक संबंधों की विस्तार से व्याख्या करते हुए बताया है कि किस तरह यह रूस की आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था को प्रभावित करता था।

ब्लम की अन्य पुस्तकों में 'नोबल लैंडओनर्स एंड एग्रीकल्चर इन ऑस्ट्रिया : 1815-1848 (1948), द इमर्जेंस ऑफ द यूरोपियन वर्ल्ड (1966), द यूरोपियन वर्ल्ड सिंस 1815 : ट्रायंफ एंड ट्रांजिशन (1970), द एंड ऑफ द ओल्ड ऑर्डर इन रूरल यूरोप (1978), आवर फॉरगॉटेन पास्ट : सेवेन सेंचुरीज ऑफ लाइफ ऑन द लैंड (1982), और इन द बिगिनिंग : द एडवेंट ऑफ द मॉडर्न एज, यूरोप इन द 1840 (1994) आदि हैं। कहना न होगा कि प्रो. ब्लम के कार्य गाँवों के आर्थिक इतिहास को समझने में मदद करते हैं।

आगामी प्रकाशन : ग्रामीण इतिहास, खंड 1

सं. - देवेंद्र चौबे, दीपक कुमार राय, रश्मि चौधरी, खंड 1 अवधारणा और संदर्भ; खंड 2 ग्रामीण इतिहास का स्थानीय संदर्भ; खंड 3 ग्रामीण इतिहास : वैचारिक संदर्भ; खंड 4 ग्रामीण इतिहास का राष्ट्रीय संदर्भ; खंड 5 ग्रामिण इतिहास का वैश्विक संदर्भ; परिशिष्ट : संदर्भ ग्रंथ सूची, लेखक परिचय और नामानुक्रमणिका।

10वाँ सर्जनात्मक इतिहास वार्षिक सम्मेलन 2022, जयहरीखाल

इतिहास समाचार में सर्जनात्मक इतिहास से संबंधित गतिविधियों, उपलब्धियों, और समाचारों आदि को प्रकाशनार्थ निम्नलिखित पते अथवा ई-मेल पर भेजा जा सकता है :

क्रिएटिव हिस्ट्री ट्रस्ट
34/1, फ्लैटः ई-1, डेसू रोड, महरौली, नई दिल्ली-110030
ई-मेलः creativehistorygroup@gmail.com
CREATIVE HISTORY TRUST रंगश्री, 72, पॉकेट-4, सेक्टर-12, द्वारका, नयी दिल्ली-110078

क्रिएटिव हिस्ट्री ट्रस्ट, नई दिल्ली के लिए रश्मि चौधरी और अखिलेश कुमार पाण्डेय द्वारा प्रकाशित और स्वाति कम्युनिकेशन द्वारा मुद्रित। मोबाइल : +91-9213132174